

डॉ. अल फुहर , सभोपदेशक , सत्र 1

© 2024 अल फुहर और टेड हिल्डेब्रांट

यहाँ प्रकाश व्यवस्था अच्छी है, और यदि मेरा दम घुटने लगे। मैं थोड़ा पाने के लिए ठीक हूँ। हाँ, अगर यह मार्को रुबियो के लिए काफी अच्छा है। यह आपके लिए काफी अच्छा है।

यह सही है कि मैं मार्को के बारे में सोच रहा था जब मैंने कहा कि यह उसके लिए अच्छा नहीं लग रहा है ठीक है, क्या मैं यहाँ हूँ हाँ, नहीं, आप अच्छे हैं। ठीक है। मुझे बस यहाँ क्लिक करने की जरूरत है यह दीवार से उछल रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि यह हाँ है यह मेरे लिए उल्टा लगता है, लेकिन वास्तव में यह तस्वीर बेहतर आती है सब तैयार है, और फिर मैं आमतौर पर पहले ऐसा करता हूँ

नमस्ते, मेरा नाम डॉ. रिचर्ड एलन है। मेरे सहकर्मी और मित्र मुझे अल कहते हैं और मुझे व्याख्यानों की श्रृंखला में एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक से कुछ विचार आप सभी के साथ साझा करने में खुशी हो रही है एक्लेसिएस्टेस एक आकर्षक पुस्तक है। मैंने इसका अध्ययन करने में कुछ समय बिताया है। मैंने इसे विभिन्न कक्षाओं में पुराने नियम की काव्य पुस्तकों में पढ़ाया है, मैं एक आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन कक्षा में पढ़ाता हूँ, जहाँ मैं संभवतः एक्लेसिएस्टेस के अधिक चित्रों का उपयोग करता हूँ, जितना कि अधिकांश छात्र नहीं जानते कि क्या करना है, लेकिन एक्लेसिएस्टेस सिर्फ एक आकर्षक पुस्तक है और इसलिए मैं एक्लेसिएस्टेस बनने के लिए सम्मानित महसूस कर रहा हूँ। कुछ समय पाने में सक्षम होने और इस अविश्वसनीय पुस्तक को आपके साथ साझा करने का सौभाग्य प्राप्त करने में सक्षम होने में सक्षम होने के लिए, अक्सर पुराने टेस्टामेंट की एक उपेक्षित पुस्तक, कभी-कभी पुराने टेस्टामेंट की एक गलत समझी जाने वाली पुस्तक, लेकिन एक बहुत ही प्रासंगिक पुस्तक, एक ऐसी पुस्तक जो हमारे बारे में बात करती है। दिन उतना ही जितना लगभग 3,000 साल पहले एक बहुत ही प्राचीन संदर्भ में, एक बहुत ही अलग संदर्भ में।

और इसलिए एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के साथ, मैं व्याख्यानों की एक श्रृंखला में अगले कुछ घंटों में कुछ समय लेना चाहता हूँ ताकि पुस्तक के विषयगत दृष्टिकोण को आपके साथ साझा किया जा सके, एक दृष्टिकोण जो विभिन्न विषयों या रूपांकनों को देखता है जिन्हें हम फिर से उभरते हुए देखते हैं और एक्लेसिएस्टेस के पूरे पाठ में फिर से और मेरी राय यह है कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक की सटीक समझ पूरी तरह से दोहराए गए विषयों के रूपांकनों और आलोचनात्मक शब्दों की सटीक समझ पर निर्भर है जो हमें लगभग 3,000 साल पहले पुराने नियम की इस 12 अध्याय की पुस्तक में मिलती है। बुद्धिमान व्यक्ति कोहेलेट ने जीवन की कुछ उलझनों पर विचार किया और उनका प्रयोग किया जिनके बारे में हममें से कई लोग आज सोचते और विचार करते हुए पाते हैं। उसने दुनिया में अन्याय देखा, उसने देखा कि एक धर्मी व्यक्ति को वह मिलता है जिसके दुष्ट लोग हकदार हैं और एक दुष्ट व्यक्ति को वह मिलता है जो धर्मी लोग चाहते हैं और उसने इसे पिछड़ा हुआ देखा। उन्होंने इस दुनिया में होने वाली विभिन्न चीजों को देखा, इस पतित दुनिया में जो न केवल उचित लगती हैं, बल्कि कभी-कभी बेतुकी भी लगती हैं और मानवीय तर्क के सामने ऐसी चीजें होती हैं, जिनका उस दुनिया में कोई मतलब नहीं होता है, जिसे भगवान द्वारा शासित किया जाना चाहिए, जहाँ कोई भी ऐसा कर सकता है। उम्मीद करते हैं कि चीजें एक

तरह से काम करेंगी लेकिन वे वास्तविकता के सामने उस तरह से काम नहीं करतीं जिस तरह से हम उनसे उम्मीद करते हैं और इसलिए हजारों साल पहले हमारे बुद्धिमान लोगों ने इन चीजों पर ऐसे संदर्भ में विचार किया था जहां ज्ञान ऋषियों ने कई खर्च किए थे कई घंटे? गिरी हुई दुनिया की वास्तविकताओं पर विचार करते हुए जिसमें वे रहते थे और उन तरीकों को खोजने की कोशिश कर रहे हैं जिनसे ज्ञान कुछ समाधान पर आ सके, इनमें से कुछ कठिनाइयों का उत्तर मिल सके, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक एक ज्ञान पुस्तक है और यह पुराने नियम की ज्ञान शैली के भीतर पाई जाती है। एक कार्यात्मक शैली बुद्धि की किताबें बड़े पैमाने पर कविता से बनी होती हैं, लेकिन विशेष रूप से नहीं। ज्ञान की किताबें जिनसे हम पुराने नियम से परिचित हो सकते हैं, उनमें नीतिवचन की किताब, अय्यूब की किताब शामिल है, जहां आपको एक आदमी के अनुभवों में कुछ बड़ी चुनौतियां मिलती हैं। पारंपरिक ज्ञान को सामने लाया गया और फिर एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में जहां प्रतिबिंब भाषणों और उदाहरण कहानियों और यहां तक कि थोड़ा सा आत्मकथात्मक अनुभव के माध्यम से हमारे बुद्धिमान व्यक्ति कोहेलेट अपनी दुनिया की कठिनाइयों और चुनौतियों पर विचार करते हैं और इसलिए मैंने कोहेलेट नाम का उल्लेख किया और उनसे परिचय कराया गया। एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में यह आंकड़ा मैं कभी-कभी उसे सुलैमान के रूप में संदर्भित कर सकता हूं।

वहाँ कोहेलेट के साथ निश्चित रूप से एक सोलोमोनिक पहचान है, लेकिन आप मुझे अक्सर उसे एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में हमारे प्राथमिक व्यक्ति को कोहेलेट के रूप में संदर्भित करते हुए देखेंगे। आप में से कुछ लोग जो किंग जेम्स संस्करण जैसे अंग्रेजी अनुवादों से परिचित हैं, वे नए अंतर्राष्ट्रीय संस्करण में "उपदेशक" या "शिक्षक" नाम से परिचित होंगे और उपदेशक और शिक्षक केवल हिब्रू कोहेलेट का अनुवाद है। कोहेलेट बस एक सहभागी रूप है इसलिए यह क्रिया कोहोल हिब्रू क्रिया कोहोल के संज्ञा कार्य पर आधारित है। कोहोल केवल एक शब्द है जिसका अर्थ है इकट्ठा करना या इकट्ठा करना और इसलिए कोहेलेट बस वह है जो इकट्ठा करता है या जो इकट्ठा करता है। एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के अध्ययन में विद्वानों के सामने आने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक यह है कि क्या कोहेलेट वह है जो लोगों को एक सभा में इकट्ठा करता है या इकट्ठा करता है, इस प्रकार अनुवाद उपदेशक या शिक्षक है, या क्या कोहेलेट वह है जो इकट्ठा करता है और बुद्धि एकत्रित करता है।

जैसा कि हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में देखते हैं, विशेष रूप से अध्याय 7 और अध्याय 10 में नीतिवचनों का एक प्रकार का संग्रह है। कोहेलेट चाहे किसी भी मामले में शामिल हो, वह निश्चित रूप से एक बुद्धिमान व्यक्ति है। वह एक ऋषि है जो ज्ञान इकट्ठा करता है और उसकी घोषणा करता है, दूसरों को सिखाता है।

हम इसे सभोपदेशक की पुस्तक में ही देखते हैं। और इसलिए, आप मुझे कोहेलेट को उपदेशक या शिक्षक के रूप में संदर्भित करते हुए सुनेंगे। अब निस्संदेह, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के साथ महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक यह है कि क्या कोहेलेट सुलैमान है या नहीं।

एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में सुलैमान का कभी भी नाम लेकर उल्लेख नहीं किया गया है। मैं व्यक्तिगत रूप से कोहेलेट के साथ सोलोमोनिक पहचान से इनकार नहीं करूंगा। वह सुलैमान के साथ बिल्कुल एक जैसा हो सकता है।

पुस्तक के भीतर निश्चित रूप से कुछ संकेत हैं जो ऐसा सुझाव देते प्रतीत होंगे। वास्तव में, यदि आपके पास सभोपदेशक की पुस्तक में बाइबिल है, तो आप मेरे साथ पुस्तक के कुछ विशेष पाठों की ओर रुख करना चाहेंगे। किताब की शुरुआत, यरूशलेम में राजा, डेविड के बेटे, शिक्षक, कोहेलेट के शब्दों से होती है, जो निश्चित रूप से उस परिचय के साथ सुलैमान के बारे में सोचने पर मजबूर कर देगा।

लेकिन निश्चित रूप से, ध्यान रखें, वहां सुलैमान का नाम नहीं लिया गया है। एक्लेसिएस्टेस का आत्मकथात्मक खंड, विशेष रूप से अध्याय 2 श्लोक 1 से 9 तक, यह संकेत देता प्रतीत होता है कि कोहेलेट की क्षमता में विभिन्न प्रकार की चीजें थीं जिन्हें केवल राजपरिवार ही इकट्ठा कर सकता था या अनुभव कर सकता था। और निश्चित रूप से, 1 राजा अध्याय 10 और 11 में, हम पाते हैं कि सुलैमान बहुत अमीर है।

वह चाँदी और सोना एकत्र और संग्रहित करता है। कोहेलेट का दावा है कि वह किसी और की क्षमता से अधिक संपत्ति अर्जित करने में सक्षम है। कोहेलेट बुद्धि में श्रेष्ठ था।

वह बार-बार घोषणा करता है कि जिस दुनिया में वह रहता था उसके रहस्यों पर विचार करते समय वह जो करता है, वह बुद्धि के माध्यम से, ज्ञान के लेंस के माध्यम से करता है। उसकी बुद्धि उसके साथ रहती है। और निःसंदेह, हम जानते हैं कि सुलैमान को 1 राजा अध्याय 3 में ज्ञान दिया गया था। 1 राजा की पूरी कथा के दौरान, हम पाते हैं कि सुलैमान की बुद्धिमत्ता के अभ्यास के लिए कई बार सराहना की जाती है।

हम नीतिवचन की पुस्तक में सुलैमान नाम का बार-बार उल्लेख देखते हैं। और इसलिए, हम नीतिवचन की पुस्तक और नीतिवचन की उत्पत्ति को जोड़ते हैं, यहाँ तक कि 1 राजा अध्याय 4 में भी, हम पाते हैं कि सुलैमान इसका प्रवर्तक था। विभिन्न नीतिवचनों को प्रस्तुत करना सुलैमान की रचना है जिसे हम नीतिवचनों की विहित पुस्तक में भी शामिल पाते हैं। और इसलिए, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो हमें सुलैमान को कोहेलेट के रूप में, लेखक के रूप में या कम से कम लेखक की एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में मौजूद व्यक्ति के रूप में सोचने पर मजबूर कर सकती हैं, लेकिन उसका नाम लेकर कभी उल्लेख नहीं किया गया है।

वास्तव में एक्लेसिएस्टेस की किताब में कुछ ऐसी बातें हैं जिनके बारे में सुलैमान द्वारा अपने बारे में बताना या हमारे लिए कोहेलेट और सुलैमान के साथ जुड़ाव के बारे में बताना थोड़ा अजीब होगा। उदाहरण के लिए, अध्याय 1 और श्लोक 12 में, मैं शिक्षक, कोहेलेट, यरूशलेम में इज़राइल का राजा था। यरूशलेम में उसके इसराइल पर राजा होने का यह संदर्भ भूतकाल में प्रतीत होता है, और हमें ऐसी कोई जगह नहीं मिलती जहाँ सुलैमान कभी राजा न रहा हो।

वह राजा के रूप में मरता है। और इसलिए अगर यह सोलोमन के साथ जुड़ा है तो यह थोड़ा अजीब लगेगा। पुस्तक में शायद एक और अधिक महत्वपूर्ण अधिसूचना सभोपदेशक अध्याय 1 और श्लोक 16 में है।

मैं ने मन में सोचा, देखो, जो मुझ से पहिले यरूशलेम पर राज्य करते थे, उन से मैं अधिक बुद्धिमान हो गया हूं। और तो सुलैमान से पहले कितने राजाओं ने यरूशलेम पर शासन किया? खैर, हम जानते हैं कि दाऊद ने सुलैमान से पहले यरूशलेम पर शासन किया था, लेकिन शाऊल ने नहीं। और सुलैमान के लिए यबूसी राजाओं या अन्य लोगों के संबंध में ऐसा कहना थोड़ा अजीब लगेगा।

और इसलिए, यह तथ्य कि सुलैमान, या यहाँ कोहेलेट, बहुवचन में उससे पहले यरूशलेम पर शासन कर चुके लोगों का उल्लेख करता प्रतीत होता है, सुलैमान की ओर से थोड़ा अजीब प्रतीत होगा। लेकिन निश्चित रूप से, इनमें से कोई भी चीज़ हमें यह नहीं बताती है कि सोलोमन की पहचान कोहेलेट के साथ नहीं की जानी चाहिए, और कई लोग यह तर्क देंगे कि कोहेलेट के साथ सोलोमोनिक पहचान के पक्ष में सबूत उन सबूतों की तुलना में अधिक है। अब, वर्षों से आलोचनात्मक विद्वता ने कोहेलेट के साथ सोलोमोनिक पहचान या लेखकत्व से इनकार किया है, और कई विद्वान एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक को निर्वासन के बाद की अवधि के दौरान भी बताते हैं, यूनाइटेड किंगडम के वर्षों और सोलोमन के वर्षों से भी आगे।

मेरी राय में, व्यक्तिगत रूप से, एक्लेसिएस्टेस का संदेश किसी विशेष पृष्ठभूमि या संदर्भ पर उतना निर्भर नहीं है जितना शायद कुछ अन्य पुस्तकों में है। उदाहरण के लिए, भविष्यवक्ता। जब हम भविष्यसूचक साहित्य का अध्ययन करते हैं, तो कई बार उनका संदेश सीधे तौर पर उन भू-राजनीतिक परिस्थितियों और घटनाओं से जुड़ा होता है जो उनके समय में घटित हो रही होती हैं।

आपको सभोपदेशक की पुस्तक में उस प्रकार की आवश्यकता नहीं मिलती। यह संदेश भू-राजनीतिक या स्थितिजन्य या ऐतिहासिक प्रकार के संदर्भों से जुड़ा नहीं है, और इसलिए हम सोलोमोनिक पहचान के इस मुद्दे पर अधिक चिंतित नहीं होंगे। मैं इनमें से बहुत सी बातें केवल आप सभी को यह बताने के लिए कहता हूँ कि इसे कौन देख रहा है, यदि मैं सोलोमन का संदर्भ नहीं देता, बल्कि कोहेलेट का संदर्भ देता हूँ, तो मैं इसका उल्लेख कर रहा हूँ कि पाठ स्वयं हमारे लिए क्या प्रदान करता है।

अब, कोहेलेट के बारे में कुछ दिलचस्प बातें। पुस्तक के कुछ भागों में उसका उल्लेख तीसरे व्यक्ति में किया गया है, और पुस्तक के अन्य भागों में, वह पहले व्यक्ति में बोलता है। मैं, कोहेलेट, ने यह किया।

मैं, कोहेलेट, ने ऐसा किया। और इसलिए, हमारे पास यह दिलचस्प गतिशीलता है, जो शायद यह संकेत देती प्रतीत होती है कि कोहेलेट आकृति और एक्लेसिएस्टेस के लेखक के बीच कुछ दूरी हो सकती है। फिर, यह जरूरी नहीं कि पाठ के प्रेरित अधिकार के लिए कोई समस्या हो।

उदाहरण के लिए, गॉस्पेल में, यीशु किसी भी गॉस्पेल के लेखक नहीं हैं, और फिर भी हमें इससे कोई समस्या नहीं है। और इसलिए, पाठ का अधिकार आवश्यक रूप से लेखक की पहचान और चित्र के एक ही होने में निहित नहीं है। फिर, जरूरी नहीं कि ये चीजें किसी न किसी तरह से साबित हों, लेकिन ये हमारी चिंताएं हैं जिन्हें हम पूरी तरह से नजरअंदाज भी नहीं करना चाहते हैं।

मेरी राय में, वास्तव में, एक कारण यह है कि मैं सुलैमान के जीवन के अनुभवों और हम उसके जीवन और 1 राजा अध्याय 11 में सुलैमान के पतन के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, उससे सीधे तौर पर जुड़ने से कतराते हैं, वह यह है कि कभी-कभी मैं कृत्रिम रूप से थोपने के बारे में सोचता हूँ एक्लेसिएस्टेस के पाठ पर आधारित इतिहास ने वास्तव में पुस्तक की गलत व्याख्या की है। वास्तव में, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के बारे में सबसे आम लोकप्रिय दृष्टिकोणों में से एक यह है कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक उसके जीवन के अंत में सुलैमान की गवाही है। जब वह अपने होश में आता है और उसे यह एहसास होता है कि यहोवा को त्यागने और मूर्तियों और झूठे धर्मों को अपनाने के कारण वह अपने अनुभव में और इज़राइल के जीवन में आता है, तो वह अपने होश में आता है और उसे एहसास होता है कि यह सब कुछ था गलत है और यह सब भटकाता है और वास्तव में ईश्वर से डरना और ईश्वर की सेवा करना ही एकमात्र मार्ग है जो जीवन को कोई उद्देश्य या अर्थ प्रदान करता है।

मुझे लगता है कि जब लोग एक्लेसिएस्टेस की किताब में उस तरह की जीवनी थोपते हैं, तो इससे वास्तव में गलत व्याख्यात्मक निष्कर्ष निकलते हैं। वे चीजें जिनकी सभोपदेशक की पुस्तक, पाठ और स्वयं 12 अध्याय गवाही नहीं देते। उदाहरण के लिए, हमें एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कहीं भी ऐसा नहीं मिलता, जहां कोहेलेट का दावा हो कि वह मूर्तिपूजक बन गया है या इस तरह से पीछे हट गया है।

हम एक्लेसिएस्टेस या कोहेलेट के लेखक को कभी भी ईश्वर को त्यागते या ईश्वर के भय के अलावा किसी अन्य चीज़ को उचित और सही होने का दावा करते हुए नहीं पाते हैं। और इसलिए फिर, हमें पथभ्रष्टता या मूर्तिपूजा या यहां तक कि सुखवाद की किसी भी तरह की गवाही नहीं मिलती है, हालांकि अक्सर यह पुस्तक के अध्याय 12 या अध्याय 2 और छंद 1 से 9 में पढ़ा जाता है। फिर से, एक्लेसिएस्टेस के अध्ययन में ध्यान रखने योग्य कुछ बातें।

अब, जहां तक पाठ का सवाल है, एक्लेसिएस्टेस की संरचना और शैली, ऐसी कई चीजें हैं जो वास्तव में एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक को काफी आकर्षक बनाती हैं, खासकर जब पुस्तक के लिए विषयगत दृष्टिकोण अपनाते हैं। एक के लिए, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के भीतर स्टॉक शब्दावली की पुनरावृत्ति। ऐसे शब्द जो हमें पुराने नियम में कहीं और मिल सकते हैं, लेकिन एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक इन शब्दों को इस तरह से अपनाती है और कभी-कभी कुछ शब्दों से संबंधित अर्थ भी जोड़ती है जो आपको पुराने नियम में कहीं और नहीं मिलते हैं।

उदाहरण के लिए, कुछ दोहराए गए शब्द जो एक्लेसिएस्टेस के इस अध्ययन में सामने आएंगे। हिब्रू शब्द हेवेल, जिसका अर्थ है धुंध या वाष्प। हम पाते हैं कि यह शब्द एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में 38 बार दोहराया गया है और जिस तरह से कोहेलेट ने हेवेल शब्द का उपयोग किया है उसकी सटीक व्याख्या या समझ एक्लेसिएस्टेस की किताब की सटीक व्याख्या करने के लिए बिल्कुल आवश्यक है।

अन्य कीवर्ड जैसे कि टीओवी, इस हेवेल दुनिया में क्या अच्छा पाया जा सकता है जिसमें हम रहते हैं। टीओवी शब्द एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में दोहराया गया है। सभोपदेशक ने भलाई की प्रकृति को जिस रूप में परिभाषित किया है उसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

हिब्रू शब्द यिट्रोम , एक ऐसा शब्द है जो पुराने नियम में आम नहीं है, लेकिन हम इसे एक्लेसिएस्टेस की किताब में कई बार दोहराया हुआ पाते हैं। हेवेल , लाभ या लाभ या अधिशेष की दुविधा का समाधान जिसे कोहेलेट खोज रहा है वह एक महत्वपूर्ण शब्द है। हिब्रू शब्द अमल , काम, या परिश्रम।

हिब्रू शब्द हेलेक , एक भाग, बहुत, एक आवंटन। सभोपदेशक की पुस्तक में उस शब्द का उपयोग किस प्रकार किया गया है, इसे सटीक रूप से समझना संदेश को समग्र रूप से समझने के लिए महत्वपूर्ण होगा। और इसलिए, जैसे ही हम सभोपदेशक की पुस्तक में विभिन्न विषयों या प्रमुख रूपांकनों के माध्यम से अपना काम करते हैं, हम कुछ हिब्रू शब्दों से अवगत होंगे।

यह हिब्रू व्याख्या वर्ग नहीं है। यह उस पुस्तक की व्याख्या का स्तर नहीं है जिसे मैं यहां प्रस्तुत करना चाहता हूं, लेकिन आपको, विद्यार्थी, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के कुछ आलोचनात्मक शब्दों से परिचित कराना नितांत आवश्यक है। उस ज्ञान के बिना, मुझे नहीं लगता कि सभोपदेशक की पुस्तक को समझना इतना आसान होगा।

एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में हम विभिन्न साहित्यिक विधाओं से भी परिचित हुए हैं। कार्यात्मक रूप से कहें तो, यह एक ज्ञान पुस्तक है। दूसरे शब्दों में, सभोपदेशक की पुस्तक ज्ञान साहित्य की परंपरा में है।

इसमें ज्ञान साहित्य का कार्य है। व्यावहारिक और धार्मिक दोनों मोर्चों पर इसका उद्देश्य ज्ञान साहित्य है। व्यावहारिक रूप से कहें तो, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक एक प्रतिमानात्मक और बहुत ही व्यावहारिक तरीके से दर्शाती है कि कैसे एक बुद्धिमान व्यक्ति को लाभ होता है या पतित दुनिया में लाभ मिल सकता है।

पतित संसार में रहने से मानवजाति को जो कठिनाइयाँ या चुनौतियाँ आती हैं, उनके आलोक में भी वह जीवन का अधिकतम लाभ कैसे उठा सकता है। और इसलिए, उस अर्थ में, पुस्तक बहुत व्यावहारिक है, नीतिवचन की पुस्तक से लौकिक ज्ञान बहुत व्यावहारिक है। लेकिन हम यह भी पाते हैं कि सभोपदेशक की पुस्तक में, कुछ धार्मिक मुद्दों को उठाया गया है, बिल्कुल अय्यूब की पुस्तक की तरह।

जबकि अय्यूब की पुस्तक में, हमारे पास एक प्रकार की ज्ञान थियोडिसी है जहां अय्यूब का लेखक ईश्वर की न्याय की भावना के प्रश्न से जुड़ा है। हम पाते हैं कि वही प्रश्न एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में चिंतन, भाषणों और यहां तक कि लौकिक ज्ञान के माध्यम से निपटाया गया है। और इसलिए, धार्मिक दृष्टि से और साथ ही व्यावहारिक दृष्टि से, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक ज्ञान साहित्य की परंपरा के बहुत भीतर है।

लेकिन कार्यात्मक रूप से कहें तो, एक ज्ञान पुस्तक के रूप में, एक्लेसिएस्टेस में संरचनात्मक और साहित्यिक तकनीकें भी शामिल हैं जो हिब्रू कविता के भीतर विशिष्ट हैं। और इसलिए, उदाहरण के लिए, हम सभोपदेशक की पुस्तक के अध्याय 7 में, अध्याय 10 में नीतिवचन पाते हैं। उन अध्यायों में, लगभग पूरे अध्याय नीतिवचनों से युक्त हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम नीतिवचन की विहित पुस्तक में नीतिवचनों के संग्रह में पाते हैं। .

अध्याय 11, छंद 1 से 6 में, हमें नीतिवचनों का एक संग्रह मिलता है जो जोखिम से संबंधित है और अवसर का अधिकतम लाभ कैसे उठाया जाए और इसे मैं संभाव्य ज्ञान कहना पसंद करता हूँ। एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के अध्याय 4 में, हमारे पास संतों से भी बेहतर का एक संग्रह है। फिर, अतिरिक्त नीतिवचन जो हमें इस ज्ञान पुस्तक में मिलते हैं।

उदाहरण के लिए, उदाहरण के लिए, और हम इनमें से कुछ नीतिवचनों को अधिक विस्तार से देखने के लिए कुछ समय लेंगे, अध्याय 11 में, पद 1 में, अपनी रोटी पानी पर फेंक दो क्योंकि कई दिनों के बाद तुम इसे फिर से पाओगे। . यह एक कहावत है. या आयत 2 सात को क्या आठ को भाग दो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि देश पर कैसी विपत्ति आ पड़ेगी।

यदि बादल जल से भरे हों तो वे पृथ्वी पर वर्षा करते हैं। पेड़ चाहे दक्षिण में गिरे या उत्तर में, जिस स्थान पर गिरेगा, वहीं पड़ा रहेगा। एक प्रकार की अवलोकनात्मक कहावत।

या श्लोक 4 में, जो कोई हवा को देखता है वह बो नहीं पाएगा, जो कोई बादलों को देखता है वह काट नहीं पाएगा। जोखिम लेने पर मेरी पसंदीदा कहावतों में से एक। कभी-कभी एक बुद्धिमान व्यक्ति को, ईश्वर द्वारा दिए गए अवसरों का लाभ उठाने के लिए, एक कदम आगे बढ़ाना चाहिए, भले ही परिणाम निश्चित न हो।

ज्ञान का एक बहुत ही व्यावहारिक अंश जो हमें यहां एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में मिलता है। इस तरह की एक कहावत नीतिवचन की विहित पुस्तक में घर जैसी ही होगी, लेकिन यहां हम इसे एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में पाते हैं। हालाँकि, एक्लेसिएस्टेस को अन्य साहित्यिक उप-शैलियों के लिए भी जाना जाता है।

उदाहरण के लिए, अध्याय 1 और अध्याय 2 में, हम आत्मकथात्मक प्रतिबिंब पाते हैं। उदाहरण के लिए, अध्याय 2 और श्लोक 1, या श्लोक 4 में, मुझे श्लोक 4 पर जाने दें। मैंने महान परियोजनाएं शुरू कीं। मैंने अपने लिये घर बनाये और अंगूर के बाग लगाये।

मैंने बगीचे और पार्क बनाये और उनमें सभी प्रकार के फलों के पेड़ लगाए। मैंने जल के जलाशय बनाए, फलते-फूलते वृक्षों के उपवन बनाए। मैंने पुरुष और महिला दास खरीदे और मेरे घर में पैदा हुए अन्य दास भी थे।

मेरे पास यरूशलेम में मुझसे पहले किसी भी अन्य की तुलना में अधिक गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ थीं। मैंने चाँदी और सोना इकट्ठा किया। वे फिर से उस कल्पना का आह्वान कर रहे हैं जिसे हम सुलैमान के साथ जोड़ेंगे।

मैंने अपने लिये और राजाओं तथा प्रान्तों के खज़ाने के लिये मनुष्य के मन को प्रसन्न करनेवाले गायक-गायिकाओं और एक हरम को भी प्राप्त कर लिया। मैं यरूशलेम में अपने से पहले के किसी भी व्यक्ति से कहीं अधिक महान बन गया। फिर से, सुलैमान की ओर से कुछ हद तक अजीब बयान आया, यह देखते हुए कि वह यरूशलेम में शासन करने वाला केवल दूसरा इज़राइली राजा था, लेकिन कुछ ऐसा जिसे सुलैमान के साथ जोड़ना असंभव नहीं है।

इस सब में मेरी बुद्धि मेरे साथ रही। तो फिर, वहां हम संरचनात्मक और साहित्यिक रूप से एक आत्मकथात्मक प्रतिबिंब पाते हैं। उदाहरण के लिए, हमें अध्याय 9 और श्लोक 13 से 16 में एक उदाहरण कहानी मिली है।

और वैसे, एक्लेसिएस्टेस की किताब के अध्याय 1 और 2 में कुछ दिलचस्प बात यह है कि आपको यह आत्मकथात्मक प्रतिबिंब मिलता है जो एक राजसी व्यक्ति की आवाज़ से आता हुआ प्रतीत होता है। लेकिन बाद में किताब में, ऐसा लगता है कि कोहेलेट उस तरह के जुड़ाव से पीछे हट रहे हैं। इसलिए, वह रॉयल्टी का पालन करता है न कि ऐसे बोलता है मानो वह रॉयल्टी हो।

लेकिन किसी भी मामले में, अध्याय 9 और श्लोक 13 से 16 में एक उदाहरण कहानी का एक अच्छा उदाहरण, मैंने सूरज के नीचे भी देखा। वैसे, सूरज के नीचे उन वाक्यांशों में से एक होने जा रहा है जो एक्लेसिएस्टेस की पूरी किताब में बार-बार दोहराए जाते हैं। बुद्धिमत्ता के इस उदाहरण ने मुझे बहुत प्रभावित किया।

वहाँ एक छोटा सा शहर था जिसमें केवल कुछ ही लोग थे। एक शक्तिशाली राजा ने उसके विरुद्ध आकर उसे घेर लिया, और उसके विरुद्ध बड़े पैमाने पर घेराबंदी की। उस नगर में एक गरीब परन्तु बुद्धिमान मनुष्य रहता था, और उस ने अपनी बुद्धि से उस नगर को बचा लिया।

लेकिन किसी को भी वह गरीब आदमी याद नहीं है। तो, मैंने कहा, ताकत से बुद्धि बेहतर है। परन्तु उस कंगाल की बुद्धि तुच्छ समझी जाती है, और उसकी बातें फिर सुनी नहीं जातीं।

अब इसके बाद नीतिवचन आते हैं। मूर्खों के शासक की चिल्लाहट की अपेक्षा बुद्धिमानों की शांत बातें अधिक ध्यान देने योग्य होती हैं। लेकिन श्लोक 13 और 16 में एक उदाहरण कहानी नीतिवचन को निष्कर्ष के रूप में स्थापित करती है।

और इसलिए फिर से, हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में कुछ साहित्यिक लचीलेपन का एक उदाहरण देखते हैं। आपको पुस्तक में रूपक के उदाहरण भी मिलेंगे। अधिक प्रसिद्ध उदाहरणों में से एक अध्याय 12 और श्लोक 1 से 7 में है, जहां बुढ़ापा, उम्र बढ़ने की प्रक्रिया, को एक विस्तारित रूपक के रूप में रूपक या प्रस्तुत किया गया प्रतीत होता है।

और निश्चित रूप से, इसे पाठ को रूपक बनाने के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जिसे मैं पाठ को पढ़ने के लिए एक गलत दृष्टिकोण कहूंगा, बल्कि एक रूपक केवल एक साहित्यिक उपकरण है जो रूपक को आगे बढ़ाता है। और इसलिए अध्याय 12 और पद 1 में, अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण करो, इससे पहले कि संकट के दिन आएँ और वे वर्ष आएँ जब तुम कहोगे, सूर्य और प्रकाश और चंद्रमा से पहले, मुझे उनमें कोई खुशी नहीं मिलती और

तारे अन्धेरे हो जाते हैं, और बादल वर्षा के बाद फिर लौट आते हैं, जब घर के रखवाले कांपने लगते हैं और जब बलवान लोग चक्की पीसने वाली कम हो जाती हैं, तब झुक जाते हैं, और जब सड़क के द्वार बन्द हो जाते हैं, तब खिड़कियों से देखने वालों की आँखें धुंधली हो जाती हैं। और पीसने की आवाज फीकी पड़ जाती है, जब लोग पक्षियों की आवाज सुनकर उठते हैं और उनके सभी गाने फीके पड़ जाते हैं, जब लोग ऊंचाई से और सड़कों पर खतरों से डरते हैं, जब बादाम के पेड़ पर फूल खिलते हैं और टिड्डा अपने आप को घसीटता है। और निश्चित रूप से, यहां हम जानते हैं कि कोहेलेट बादाम के पेड़ों और टिड्डों के बारे में बात नहीं कर रहा है, लेकिन वह उम्र बढ़ने की प्रक्रिया की एक छवि प्रस्तुत करने के लिए इन विभिन्न चित्रों का उपयोग कर रहा है।

और इसलिए, दुभाषिया को यह पता लगाना होगा कि इनमें से कुछ छवियां किस ओर इशारा कर रही हैं। तब मनुष्य अपने शाश्वत घर को चला जाता है और शोक मनाने वाले लोग सड़कों पर घूमते हैं। इससे पहले कि चाँदी का तार टूट जाए, या सोने का कटोरा टूट जाए, इससे पहले कि सोते पर घड़ा टूट जाए, या कुएँ पर पहिया टूट जाए, और धूल उसी भूमि पर लौट जाए जहाँ से वह आई थी, और आत्मा परमेश्वर के पास लौट आए किसने दिया।

तो यहाँ हमारे पास फिर से रूपक का एक उदाहरण है। एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में हमें कविताएँ भी मिली हैं। बेशक, सबसे प्रसिद्ध कविताओं में से एक अध्याय 3 और छंद 2 से 8 में है, समय पर कविता, जहाँ आपको उचित समय या निर्धारित समय के विभिन्न पहलुओं से निपटने वाली ये बाइनरी जोड़ियाँ मिली हैं, और यह कुछ ऐसा है हम बाद में भविष्य के व्याख्यान में कुशती लड़ेंगे।

लेकिन किसी भी मामले में, समय पर एक कविता, जन्म लेने का समय और मरने का समय, योजना बनाने का समय और उखाड़ने का समय, मारने का समय और ठीक होने का समय, उखाड़ने का समय और उखाड़ने का समय निर्माण करें, रोने का समय और हंसने का समय, शोक करने का समय और नृत्य करने का समय, पत्थर बिखेरने का समय और उन्हें इकट्ठा करने का समय, गले लगाने का समय और टालने का समय, खोजने का समय और त्यागने का समय, रखने का समय और फेंक देने का समय। आंसू बहाने का समय और सुधारने का भी समय, चुप रहने का भी समय और बोलने का भी समय, प्रेम करने का भी समय और घृणा करने का भी समय, युद्ध का भी समय और शांति का भी समय। यह एक स्व-निहित इकाई है।

यह एक कविता है। इसके पहले क्या होता है, इसके बाद क्या होता है, यह कविता पर एक टिप्पणी हो सकती है, लेकिन कविता स्वयं एक स्वतंत्र साहित्यिक कृति है। आपको एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में ऐसे उदाहरण भी मिलेंगे जिन्हें हम प्रतिबिंब भाषण कहते हैं।

शायद प्रतिबिंब भाषण का मेरा सबसे अच्छा या पसंदीदा उदाहरण अध्याय 9 में है। मेरा मतलब है, वास्तव में इसका परिचय आपको बताता है कि यह एक प्रतिबिंब भाषण है। तो कोहेलेट कहते हैं, इसलिए मैंने, पहले व्यक्ति, इस सब पर विचार किया और निष्कर्ष निकाला कि धर्मी और बुद्धिमान और वे जो करते हैं वह भगवान के हाथों में है, लेकिन कोई भी व्यक्ति नहीं जानता कि प्यार या नफरत उसका इंतजार कर रही है या नहीं। सभी की नियति एक समान है, धार्मिक और दुष्ट, अच्छे और बुरे, स्वच्छ और अशुद्ध, जो बलिदान चढ़ाते हैं और जो नहीं करते हैं।

जैसा कि अच्छे आदमी के साथ होता है, वैसा ही पापी के साथ होता है, जैसा उनके साथ होता है जो शपथ लेते हैं, वैसा ही उनके साथ होता है जो उन्हें लेने से डरते हैं। और इसलिए यहां आपको कोहेलेट कुछ टिप्पणियों पर विचार करते हुए मिलेगा जो वह कर रहा है। और इसलिए, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक एक मिश्रण है, यह विभिन्न साहित्यिक रूपों या उपशैलियों का एक कोलाज है जो ज्ञान साहित्य की कार्यात्मक शैली के भीतर मानक किराया है।

और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते रहेंगे, हम बाद में इनमें से और अधिक उपशैलियों को देखेंगे और उनसे परिचित होंगे। आपके पास अन्य संरचनात्मक तत्व हैं जैसे इन्क्लूसियो, एक प्रकार की साहित्यिक पुस्तक का अंत, या एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के भीतर ब्रैकेटिंग। इस प्रकार की ब्रैकेटिंग हम वास्तव में पूरी किताब को अध्याय 1 और अध्याय 12 में परिचय और निष्कर्ष के साथ एक साथ रखते हुए पाते हैं।

हेवेल्स का हेवेल . अब यह एक हिब्रू शब्द है जिससे मैं आपको थोड़ा परिचित कराने जा रहा हूं। एनआईवी, जो वास्तव में मेरे सामने है, अर्थहीन अर्थहीन पढ़ता है।

मैं अर्थहीन शब्द का उपयोग करने से इसलिए बचता हूँ क्योंकि मुझे नहीं लगता कि यह हेबेल शब्द का सबसे अच्छा अनुवाद है। लेकिन हम बाद में इस पर और अधिक विस्तार से विचार करेंगे। लेकिन हेवेल्स के हेवेल शिक्षक कहते हैं, पूरी तरह से हेबेल या अर्थहीन, सब कुछ फिर से अर्थहीन है जैसा कि एनआईवी के पास है।

केजेवी, जिससे आप में से कुछ लोग परिचित होंगे, में अनेक प्रकार की व्यर्थताएँ हैं। और इसलिए आपके पास वह कीवर्ड हेवेल हमारे लिए अनुवादित है। अध्याय 12 और श्लोक 8 में, हमें हेवेल्स का हेबेल मिला है।

अर्थहीन अर्थहीन कोहेलेट या शिक्षक कहते हैं। सब कुछ हेबेल है. वहाँ फिर से, आपको अध्याय 1 और श्लोक 2 में समस्या के रूप में जिस चीज़ से परिचित कराया गया है, उसकी पुनरावृत्ति हुई है। उस साहित्यिक पुस्तक के अंत को इन्क्लूज़ियो कहा जाता है, और हम बाद में जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, इसके कुछ अन्य उदाहरण देखेंगे। .

हमें पुस्तक के अंत में एक उपसंहार भी मिला है। वास्तव में हेवेल्स की घोषणा के हेबेल के पिछले अंत के बाद। हमें अध्याय 12 और श्लोक 9 में मिला है, न केवल शिक्षक बुद्धिमान थे, कोहेलेट बुद्धिमान थे, यहां उनके बारे में तीसरे व्यक्ति में बात की गई है, बल्कि उन्होंने लोगों को ज्ञान भी दिया।

उसने मनन किया, खोज-बीन की और बहुत-सी कथावतें क्रमबद्ध कीं। अध्याय 7, अध्याय 10 और अध्याय 11 में हमें यह कथावत मिलती है। कोहेलेट ने खोज की और उन्हें बिल्कुल सही शब्द मिले और उन्होंने जो लिखा वह ईमानदार और सच्चा था।

वैसे, मुझे यहां एक सेकंड के लिए रुकने दीजिए। ऐसे कई लोग हैं जो सभोपदेशक की पुस्तक के प्रति बहुत नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं। व्याख्यानों की इस शृंखला में जो चीजें आप पाएंगे

उनमें से एक यह है कि मैं जीवन के प्रति बहुत आशावादी, या मैं बस यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाता हूँ, जैसा कि यहां हमारे कोहेलेट के लेंस के माध्यम से देखा जाता है।

मैं पुस्तक की व्याख्या के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाता हूँ। मुझे लगता है कि पवित्रशास्त्र के सिद्धांत के भीतर इसका संदेश अत्यधिक सकारात्मक है, व्यावहारिक और धार्मिक दोनों ही दृष्टि से। और फिर, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम यहां उन विवरणों के बारे में जानेंगे।

लेकिन मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है कि उपसंहार स्वयं कोहेलेट के शब्दों को सही और सत्य के रूप में बताता है, और इसलिए जो दृष्टिकोण एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में भाषा के बड़े हिस्से को नकारात्मक के रूप में देखता है, मैं वास्तव में उसे नहीं देखता हूँ पाठ की गवाही से ही पता चलता है। बुद्धिमानों के शब्द एक चरवाहे द्वारा दिए गए मजबूती से जड़े गए कीलों की तरह एकत्र किए गए हैं। मेरे बेटे, इनके अतिरिक्त किसी भी चीज़ के प्रति सचेत रहो।

यह हमें नीतिवचन अध्याय 1-9 में मेरे बेटे को दी गई चेतावनी के साथ निर्देशात्मक संवाद या निर्देशात्मक प्रवचनों के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। बहुत सी पुस्तकों की रचना करने का कोई अंत नहीं है, और बहुत अध्ययन करने से शरीर कहाँ है? अब सब सुन लिया गया है, मामले का निष्कर्ष यही है। ईश्वर से डरो और उसकी आज्ञाओं का पालन करो, क्योंकि यही मनुष्य का संपूर्ण कर्तव्य है।

क्योंकि ईश्वर हर कर्म का न्याय करेगा, जिसमें हर छिपी हुई चीज़ भी शामिल है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी, और इसलिए पुस्तक तीसरे व्यक्ति के उपसंहार के साथ समाप्त होती है, और फिर से हम इसे एक प्रकार के साहित्यिक निष्कर्ष के रूप में देखते हैं। अब मैं सभोपदेशक की पुस्तक के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाना चाहता हूँ, जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, एक विषयगत दृष्टिकोण है। और इसलिए इस विषयगत दृष्टिकोण के साथ, हम अन्योन्याश्रित प्रमुख रूपांकनों से अवगत होने जा रहे हैं जो एक्लेसिएस्टेस के 12 अध्यायों के भीतर बार-बार सामने आते हैं।

एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में न केवल प्रमुख स्टॉक शब्दों को समझना बहुत महत्वपूर्ण है, बल्कि पुस्तक के भीतर के रूपांकनों और उनके कार्यों और वे एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं, यह भी समग्र रूप से संदेश की सटीक या उचित समझ के लिए महत्वपूर्ण है। अब इन व्याख्यानों के अंत में, हम सभोपदेशक के पाठ के माध्यम से अपना काम करने में अधिक समय व्यतीत करेंगे। और हम निश्चित रूप से बहुत कुछ करेंगे क्योंकि हम इन प्रमुख रूपांकनों से अवगत होंगे।

लेकिन इस परिचय में, मैं कम से कम इनमें से कुछ रूपांकनों को संक्षेप में तैयार करके शुरुआत करना चाहूंगा, और फिर जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम उन्हें और अधिक विस्तार से देखेंगे। इनमें से पहला रूप जिससे मैं आपको अवगत कराना चाहता हूँ वह है जीवन की भारीता। अब मुझे पता है कि यह एक अजीब शब्द है।

यह कोई नियमित अंग्रेजी शब्द नहीं है। मैं एक तरह से हिब्रू शब्द हेवेल ले रहा हूँ, जिसका शाब्दिक अर्थ धुंध या वाष्प है, और यह एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में 38 बार पाया जाता है। हम यहां अगले व्याख्यान में इसका अर्थ विस्तार से जानेंगे।

और हम इसे पुस्तक के भीतर एक मूल भाव के रूप में समझने जा रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यह जीवन की गिरती हुई स्थिति की दुविधा की प्रतिनिधि समस्या है। यही वह समस्या है जिसका सामना कोहेलेट को करना पड़ता है और वह इस समस्या, इस दुविधा को हल करने या समाधान करने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करता है, जिसका सामना पूरी मानव जाति को करना पड़ता है।

भारीता, इस दुनिया में जिन चीजों को वह देखता है जिन्हें वह भारीपन के रूप में वर्णित करता है, वह जो निर्णय लेता है जिसके बारे में वह दावा करता है कि वह भारी है, जिन चीजों को वह देखता है कि बुद्धि हल करने में असमर्थ है, वह उसे भी भारीपन कहता है। और इसलिए चीजों की भारीता, जीवन की भारीता, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में मूल भाव की भूमिका निभाती है। ऐसे कुछ दृष्टिकोण हैं जिनसे हम एक्लेसिएस्टेस में अवगत होने जा रहे हैं जो मूल भाव की भूमिका भी निभाते हैं।

एक है सूर्य के नीचे का परिप्रेक्ष्य। दूसरे शब्दों में, सूर्य के नीचे का परिप्रेक्ष्य क्या है जिसके माध्यम से कोहेलेट जीवन का अवलोकन करता है, यह ठीक से समझना पुस्तक की उचित व्याख्या करने में महत्वपूर्ण होगा। क्या सूर्य के नीचे का परिप्रेक्ष्य एक भटका हुआ, गिरा हुआ, ईश्वर-विहीन परिप्रेक्ष्य है? या क्या यह महज़ एक क्षैतिज, मानवीय स्तर का, गैर-प्रकटीकरणात्मक परिप्रेक्ष्य है? यह पुस्तक को समझने में महत्वपूर्ण होगा।

बुद्धि स्वयं एक आदर्श बन जाती है। बुद्धि एक दृष्टिकोण है जिसके माध्यम से जीवन की गंभीरता को परखा जाता है। हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि यह ज्ञान के लेंस के माध्यम से है कि कोहेलेट ने यह यात्रा की है।

निस्संदेह, पुस्तक को ज्ञान साहित्य के रूप में इसके कार्य और इसकी विशेषताओं के अनुरूप समझने की आवश्यकता है। और इसलिए, हम एक्लेसिएस्टेस के अध्ययन के लिए उचित व्याख्यात्मक सुझाव या व्याख्यात्मक नियम लेने जा रहे हैं जो ज्ञान साहित्य के अध्ययन पर लागू होते हैं। एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में स्वयं बुद्धि की खोज की गई है।

भारीपन की दुविधा को हल करने में सक्षम होने के लिए बुद्धि की क्षमता का पता लगाया जा रहा है। यदि बुद्धि हेवेल की दुविधा को हल करने में सक्षम नहीं है तो फिर भी वह किस काम की है? इन चीजों को सभोपदेशक की पुस्तक में मूल भाव के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। और इसलिए भारीपन, सूर्य के नीचे परिप्रेक्ष्य, और ज्ञान सभी रूपांकन हैं।

ईश्वर की संप्रभुता और मानव जाति पर सीमा थोपना एक धार्मिक उद्देश्य बन जाता है जो एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में पिरोया गया है। दूसरे शब्दों में, कोहेलेट कुछ ऐसी उलझनों का पता लगाने जा रहा है जो एक संप्रभु ईश्वर को पहचानने से आती हैं जो चीजों पर नियंत्रण रखता है, और फिर भी इस दुनिया में कुछ चीजें होती हैं जो नियंत्रण से बाहर होती हैं। इसलिए कोहेलेट ईश्वर की प्रकृति, ईश्वर के न्याय, कार्यों और ईश्वर की गतिविधि की खोज करने वाले एक धार्मिक सुविधाजनक बिंदु से निपटने जा रहा है।

वह यह भी पता लगाने जा रहा है कि मानव जाति पर प्रतिबंध लगाने के संबंध में क्या प्रतीत होता है। एक भारी दुनिया में, एक नश्वर अस्तित्व में, मानव जाति, यहां तक कि हमारे बीच के सबसे बुद्धिमान लोग भी, इस मौजूदा स्थिति में, जिसमें हम सभी रहते हैं, भारीपन, पतन की समस्याओं को हल करने में सीमित प्रतीत होते हैं। और इसलिए हम जो खोजने जा रहे हैं वह एक धार्मिक सूत्र या रूपांकन है।

संप्रभु ईश्वर और कुछ चीजों को हल करने में मानव जाति की असमर्थता के बीच संबंध। जिसे मैं धर्मशास्त्रीय मानवविज्ञान कहना पसंद करता हूँ, उसे हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में पिरोया हुआ पाते हैं। एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में मृत्यु की अनिवार्यता एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय बन जाती है।

वास्तव में, यह वह मूल भाव है जो पुस्तक में थोड़ी नकारात्मकता लाता है। वस्तुतः हर अध्याय में, कोहेलेट विचार करने जा रहा है, आप जानते हैं, क्या आ रहा है, सभी मानव जाति का अंतिम अंत, मृत्यु। बुद्धिमान और मूर्ख, अमीर और गरीब दोनों का सामान्य अनुभव मृत्यु है।

और इसलिए, मृत्यु की अनिवार्यता एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य बन जाती है और इसे जीवन की विशालता और ईश्वर की संप्रभुता और मानव जाति पर प्रतिबंध लगाने से जोड़ती है। ज्ञान क्या समाधान ला सकता है या शायद किसी प्रकार की गारंटी भी दे सकता है कि महान में अनिवार्य रूप से क्या घटित होने वाला है? एक्लेसिएस्टेस के अध्ययन में इस प्रकार की चीजें बहुत-बहुत महत्वपूर्ण हो जाती हैं। जीवन का आनंद.

वास्तव में, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में संरचनात्मक रूप से सोचने पर, हमें सात बार परहेज मिलता है जो जीवन के आनंद को दर्शाता है और यहां तक कि जीवन के आनंद की सराहना और आदेश देता है, जो एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के संदेश को महत्वपूर्ण रूप से ध्यान में रखता है। अपनी जवानी की पत्नी के साथ जीवन का आनंद लें। अवसर का लाभ उठाएँ, कहावत है कि बैल सींग से पकड़ता है, और आपके पास जो भी अवसर है उसका अधिकतम लाभ उठाएँ।

सभोपदेशक में जीवन का आनंद लगभग एक आज्ञा, एक अनिवार्यता बन जाता है, यदि आप चाहें, तो ईश्वर न केवल मानव जाति को उपहार देता है, बल्कि मानव जाति से इसकी मांग भी करता है। और फिर भगवान का डर. ईश्वर का भय एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में अक्सर उपेक्षित, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण मूल भाव है।

और ऐसा केवल अध्याय 12 में ही नहीं, छंद 13 और 14 में चीजों के निष्कर्ष पर हम ईश्वर का भय पाते हैं। हम अध्याय 3 और श्लोक 17 में पाते हैं। हम अध्याय 5 में पाते हैं, कि ईश्वर का भय बहुत सामने और केंद्र में है।

हम सभोपदेशक 12 और पद 1 पहले ही पढ़ चुके हैं। अपनी युवावस्था के दिनों में अपने निर्माता को याद करें। ठीक है, इसका तात्पर्य ईश्वर का भय है। और इसलिए परमेश्वर का भय वास्तव में जीवन के आनंद के लिए एक संतुलन है।

मैं आपको सुझाव दूंगा कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के भीतर इन रूपांकनों की परस्पर निर्भरता को देखना और इन रूपांकनों के एक-दूसरे से संबंध को सटीक रूप से समझना, वास्तव में एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के संदेश को समझने की कुंजी है। अंत में, मुझे पता चला कि एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में वास्तव में दोतरफा ज्ञान संदेश है। आप इसे दो-तरफा सिक्के के रूप में भी देख सकते हैं।

मूल रूप से, हम एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक में जो खोजने जा रहे हैं वह यह है कि जीवन की भारीता के प्रकाश में और मृत्यु की अनिवार्यता के प्रकाश में, बुद्धिमान व्यक्ति ईश्वर से मिले उपहार के रूप में जीवन का आनंद उठाएगा, और ईश्वर द्वारा दिए गए हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएगा। उन्हें प्रस्तुत करता है. क्योंकि वे शीघ्र ही मर जायेंगे। हम नहीं जानते कि कल की हमें गारंटी है या नहीं।

इसलिए वर्तमान में आपके पास मौजूद अवसरों का लाभ उठाएं। सुनिश्चित करें कि आप ईश्वर के उपहार के रूप में जीवन का आनंद लें। पतित दुनिया के भीतर भी, जीवन का आनंद लेने में सक्षम होने की क्षमता का वह जो आवंटन देता है, उसे समझना एक बुद्धिमानी की बात है।

यदि आप चाहें तो यह एक बुद्धिमत्तापूर्ण अनिवार्यता है। लेकिन बुद्धिमत्ता का मतलब केवल जीवन का आनंद लेना नहीं है। हमें भी ईश्वर के भय में संयमपूर्वक जीना चाहिए, यह जानते हुए कि कल की कोई गारंटी नहीं है, यह जानते हुए कि हमने जो कर्म किए हैं उनके लिए हम एक दिन अपने सृष्टिकर्ता को उत्तर देंगे।

और इसलिए, एक बुद्धिमान व्यक्ति न केवल जीवन का आनंद लेगा, वह पाप का भी आनंद नहीं लेगा। एक बुद्धिमान पुरुष या बुद्धिमान महिला हर अवसर का अधिकतम लाभ उठाएगी, यह जानते हुए कि कल की कोई गारंटी नहीं है। वे परमेश्वर से भी डरेंगे, यह जानते हुए कि कल की कोई गारंटी नहीं है और हम एक दिन अपने सृष्टिकर्ता के सामने खड़े होंगे और अपने द्वारा किए गए कार्यों का उत्तर देंगे।

मैं बाइबल की किसी भी ऐसी किताब के बारे में नहीं जानता जिसमें आज के लिए एक्लेसिएस्टेस के संदेश से अधिक व्यावहारिक संदेश हो। जीवन का आनंद लें। हर अवसर का अधिकतम लाभ उठायें।

यह पहचानते हुए कि आप ईश्वर के सामने खड़े होंगे, संयमपूर्वक जिएं। ईश्वर के भय में जियो। आप जो विकल्प चुनते हैं, जो निर्णय लेते हैं, जीवन के हर कदम के हर दिन को इस प्रकार के ज्ञान प्रतिमान द्वारा निर्देशित होने दें, इसके द्वारा तैयार होने दें।

अविश्वसनीय रूप से व्यावहारिक, और हम इस व्याख्यान श्रृंखला को जारी रखते हुए एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक के संदेश की व्यावहारिकता पर जोर देंगे। फिर से, मैं इसे प्रस्तुत करने में सक्षम होने के लिए सम्मानित महसूस कर रहा हूं, एक्लेसिएस्टेस के कुछ खजानों को आपके साथ साझा करने में सक्षम होने के लिए। मुझे आशा है कि यह समय आपके लिए अच्छा व्यतीत होगा।

अपने अगले व्याख्यान में, हम जीवन के भारीपन की इस अवधारणा पर चर्चा करेंगे। हम जीवन को उसकी गिरती हुई स्थिति में देखने जा रहे हैं, और यह व्यर्थता की चीज़ क्या है, एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक सबसे अच्छी तरह से जानी जाती है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

मैं कब तक गया? ओह, यह 40 मिनट है। ठीक है, यह बहुत अच्छा है। मैं एक तरह से निश्चित नहीं था।

एक चीज़ जिसके साथ मैं प्रयोग करना चाहता हूँ। क्या आप अपना पर्दा लगभग दो फुट नीचे गिरा सकते हैं? मैं सक्षम हो सकूंगा। हाँ, बस मुझे थोड़ी-सी चकाचौंध मिल रही थी।

हाँ, और फिर मैं सोच रहा था कि यह एकदम सही है। ठीक है, तो हमने रोशनी कम कर दी। अच्छा।

ठीक है। हाँ, आप छुट्टी लेना चाहते हैं? हाँ, चलो थोड़ा ब्रेक लें। हमारे पास यहाँ कितना समय है? 11 बजे।

ठीक है, एक चीज़ जो स्पष्ट रूप से मेरे फ़ोन के साथ घटित हुई। मुझे उस ध्वनि को भी वहां खत्म करने दीजिए। तो, मैं यह फोन निकाल लूंगा।